# नदी में कम्बल

## *ईशा सरदेसाई द्वारा पुनर्लिखित*

नदी की धारा तेज़ी-से बह रही थी, मार्ग में आती चट्टानों से टकराकर थोड़ा उछलती, थोड़ा बिखरती, फिर भी बिना रुके आगे बढ़ती जा रही थी। दो आदमी — दोनों युवा — नदी के किनारे पर खड़े, घबराते हुए पानी के इस तेज़ प्रवाह को देख रहे थे। उन्हें नदी पार करनी थी, पर कैसे?

कुछ घन्टे पहले ये दो नौजवान उस दल से अलग हो गए थे जिसके साथ वे हाइकिंग [पैदल लम्बी यात्रा] कर रहे थे। वे उत्तरी अमरीका के सुदूर इलाके में — कनाडा के घने जंगलों में कहीं थे। अपने मित्रों या फिर शिविर तक वापस जाने के रास्ते की तलाश में, वे थक कर चूर अपने क़दमों को घसीटकर चलते जा रहे थे। आख़िरकार वे यहाँ नदी के किनारे आ पहुँचे थे।

इनमें से एक व्यक्ति जिसका नाम रेमी था, उसने अपने जूते उतारे और अपने पाँव का अंगूठा पानी में डाला। वह थोड़ा-सा चौंक गया। पानी ठण्डा था।

उसने अपने गरम कपड़े उतारने शुरू किए और अपने मित्र की ओर देखा।

“लियोन,” उसने कहा। “क्या तुम तैयार हो?”

लियोन चुपचाप पानी की ओर टकटकी लगाए देख रहा था। उसका चहरा फीका पड़ गया था। उसके होठ काँप रहे थे।

रेमी ने हल्के-से उसका हाथ अपनी ओर खींचा “अब चलो भी। यह सफ़र आसान नहीं होगा, पर तुम यह कर सकते हो। तुम्हें तो तैरना आता है।”

लियोन ने बिना कुछ बोले अपना सिर हिलाया, उसका चहरा अभी भी पीला पड़ा हुआ था, और वे दोनों एक-साथ पानी में उतर गए। तुरन्त-ही जलधारा का असर हुआ जिसने उनके शरीर को नदी के प्रवाह की दिशा में धकेल दिया।

अपने समस्त बल को और साथ ही अपने सम्पूर्ण पराक्रम को एकत्र कर रेमी ने अपना एक हाथ पानी में मारा और फिर दूसरा। उसने अपने पैरों को पीछे की ओर मारना शुरू किया। वह बार-बार ऐसा करता

रहा, अपने फेफड़ों में हवा भरता और हाथ-पैर चलाता और अन्ततः कुछ समय की कड़ी महनत के बाद उसे लगा कि अब तैरने की उसकी एक लय बंध रही है। वह फिर से सन्तुलित महसूस करने लगा; उसका शरीर जलधारा के साथ बहने लगा। उसे ऐसा लगने लगा कि वह प्रवाह *के साथ* कार्य कर सकता था; यह ध्यान में रखते हुए कि प्रवाह कब और किस ओर है, वह उसके अनुसार अपने हाथ-पैरों की लय को नियन्त्रित कर सकता था। *हाँ-हाँ,* उसने सोचा। *हाँ, मैं यह कर सकता हूँ।*

और जब उसने लहरों को अपने ऊपर से बहने दिया तो उसे यहाँ-वहाँ कुछ स्थानों पर गर्माहट महसूस हुई। एक बार फिर उसके दृष्टि-क्षेत्र का विस्तार हुआ और उसने अपने आस-पास बहती जलधारा के परे वे सभी रास्ते देखे जो नदी पार करने के लिए उसके सामने थे। ऐसे भी स्थान थे जो उथले दिख रहे थे, जैसे वे स्थान जहाँ जलधारा का प्रवाह थम रहा था।

"लियोन," उसने कहा। "क्या तुम्हें वह दिख रहा है?" रेमी ने अपने मित्र के लिए चारों ओर देखा; वह उसे नदी के उन स्थानों में से एक दिखाना चाहता था जहाँ जलधारा का प्रवाह कम था।

पर — लियोन तो कहीं दिखाई ही नहीं दे रहा था।

"लियोन!" रेमी ने फिर से पुकारा, इस बार वह घबराया हुआ था। "लियोन, तुम कहाँ हो?" उसने दाएँ-बाएँ देखा, उसके पाँव अभी भी उग्रता से अपना काम कर रहे थे। पानी में तेज़ बहाव के कारण झाग बन रही थी। किसी का कोई नामोनिशान नहीं था।

आख़िरकार सदियों जितने लम्बे लगने वाले समय के बाद, उसे कहीं दूर से आती, एक धुँधली-सी आवाज़ सुनाई दी।

"रेमी — रेमी, क्या तुम वहाँ हो?"

"लियोन! क्या वह तुम हो?"

रेमी ध्वनि की दिशा में जितनी तेज़ी-से तैर सकता था, उतनी तेज़ी-से तैरने लगा। जल्द-ही, वह एक ऐसे स्थान पर आ गया जहाँ नदी में घुमाव आ रहा था। और वहाँ था लियोन, नदी से बाहर झाँकती एक बड़ी-सी चट्टान को पकड़े, उसके पैर पानी में बेतहाशा झूल रहे थे। ऐसा लग रहा था जैसे नदी की मर्ज़ी और इशारों पर उसका शरीर ऊपर-नीचे, दाएँ-बाएँ, इधर-उधर हिल रहा था।

“लियोन!” वह चिल्लाया। “तुम क्या कर रहे हो?”

लियोन ने सिर ऊपर उठाया और अपने मित्र को देखा। “रेमी!” उसने जवाब दिया, उसकी आवाज़ में बहुत पीड़ा थी। “मैं यह नहीं कर सकता!”

“क्या मतलब है तुम्हारा?” रेमी चिल्लाया। “तैरो, लियोन! मैं वदा करता हूँ, ये इतना बुरा नहीं है।”

“नहीं, नहीं, कोई रास्ता नहीं है। यह बहुत-ही ख़राब विचार था,” लियोन ने पछताते हुए कहा। पानी का तेज़ छींटा उसके चहरे से टकराया।

“लियोन, मेरी बात सुनों . . .”

पर लियोन कहाँ सुनने वाला। “मुझे विश्वास नहीं हो रहा, तुमने मुझे यह करने के लिए कैसे मना लिया . . .” उसने कहा।

“लियोन — बस *तैरो!*”

*उसके लिए कहना आसान है!* लियोन ने सोचा। *वह इतना अच्छा तैराक है।* लियोन ने रोना शुरू कर दिया, पानी की थपेड़े अभी भी उसे कभी इधर तो कभी उधर ले जा रही थीं।

तभी, लियोन ने देखा कि पानी की सतह पर तेज़ी से उसकी ओर कुछ बहता हुआ चला आ रहा था, परन्तु वह साफ़ दिखाई नहीं दे रहा था। वह बड़ा, भूरा और झबरीला दिख रहा था।

“रेमी, रेमी — देखो!” उसने उत्साहपूर्वक कहा। “हम नदी पार करने के लिए इसका उपयोग कर सकते हैं।”

रेमी, जो प्रवाह के साथ बह जाने से बचने के लिए तैरता जा रहा था, उसने अपने पास से इस चीज़ को गुज़रते हुए नहीं देखा था। अब, जब वह लियोन की तरफ़ बढ़ रहा था, तब उसने नज़र घुमाकर उसे बेहतर तरीक़े से देखने का प्रयास किया।

“मुझे इसके बारे में नहीं पता . . .” उसने कुछ देर रुककर जवाब दिया।

पर लियोन उस बड़ी, भूरी चीज़ की ओर पहले-ही बढ़ चुका था। “मुझे लगता है कि यह एक कम्बल है!” वह चिल्लाया।

*"क्या?"* रेमी ने कहा। "मैंने कभी नहीं सुना कि किसी ने कम्बल पर नदी पार की हो। चलो, लियोन, बेहतर होगा कि हम तैर कर नदी पार करें।"

लेकिन रेमी के शब्दों का इतना ही असर था कि मानो वह पानी से ही बात कर रहा हो — लियोन उस कम्बल पर चढ़ने के संघर्ष में व्यस्त था। उसके पैर कुछ बार फिसले, पर अन्ततः वह उस कम्बल पर अपना संतुलन बनाने में सफल हो गया। उसने उसकी परतों को अपने हाथों से कसकर पकड़ लिया।

और कुछ क्षणों के लिए वह कम्बल पर सिकुड़कर बैठा रहा, उसका शरीर कम्बल की घनी, उलझी हुई ऊन में धँसता गया। उसने चैन की गहरी-धीमी साँस ली। *ओफ़्फ़...* अब वह सुरक्षित था।

बल्की, उसे इतना सुरक्षित, इतना संरक्षित महसूस हुआ कि उसने यह ध्यान ही नहीं दिया कि वह अब भी नीचे की ओर ही बह रहा था — और वह भी बहुत तेज़ी से। उसने यह ध्यान ही नहीं दिया कि कम्बल उतना तरणशील नहीं था जितनी उसे उम्मीद थी। न ही वह उतना स्थिर था।

शुरुआत में वह बस उसके नीचे हल्का-हल्का हिलने-डुलने जैसा महसूस हो रहा था — जैसा की तब महसूस होता है जब कोई पानी में बेड़ा [रैफ़्ट] चलाता है। पर फिर, जैसे-जैसे बहाव तेज़ होता गया, कम्बल उसकी प्रतिक्रिया में बहुत ज़ोर-ज़ोर से हिलता, उसके कुछ हिस्से सतह से नीचे पूरी तरह डूब जाते।

और वह कम्बल पानी में जितना ऊपर-नीचे उछलता, ऐसा लगता कि लियोन उसे उतनी ही मज़बूती से पकड़ रहा है। उसने अपने पैरों से उस कम्बल को जकड़ लिया, उसे अपनी बाजुओं में कसकर पकड़ लिया और अपने पूरे शरीर को उसमें धँसा दिया।

रेमी, जो अभी भी नदी के ऊपरी भाग में था, डरते-डरते यह सब होते देखता रहा। "लियोन!" वह चिल्लाया। "कृपा करके, तुम मेरी बात मानो! कम्बल को छोड़ दो!"

लियोन ने कोई उत्तर नहीं दिया। वह अब उसके साथ बुरी तरह से जूझ रहा था; ऐसा लग रहा था जैसे वह कम्बल के साथ झगड़ रहा हो। पानी की लहरें, लियोन और कम्बल, दोनों के ऊपर से बहतीं और गोल घूमतीं — और वे पानी के नीचे गायब हो जाते, और कुछ क्षण बाद फिर-से दिखाई देते।

"बस उसे छोड़ दो!" रेमी चिल्लाया।

आख़िरकार, लियोन बोला। “मैं *नहीं* छोड़ सकता!” वह रोने लगा।

“क्या मतलब है कि तुम नहीं छोड़ सकते?”

“यह कम्बल — यह कम्बल नहीं है,” उसका निराशाभरा जवाब आया।

“तो क्या है वह?!”

“यह एक भालू है, रेमी! और वह मुझे नहीं छोड़ रहा!”

© २०१९ एस.वाय.डी.ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।